ISSN : 2456-8856

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510 डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2021-2023 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30 पृष्ठ संख्या 28

आश्वस्त

वर्ष 25, अंक 239 सितम्बर 2023

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

वर्ष : 25 अंक 239
सितम्बर 2023

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/9510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

Peer Review Committee
डॉ. श्रवणकुमार मेघ, जोधपुर(राजस्थान)
प्रो. दत्तात्रय मुरुमकर, मुंबई (महाराष्ट्र)
प्रो. रहिम श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)
डॉ. बी.ए.सावंत, सांगली (महाराष्ट्र)

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	03
2.	The Relationship of Emotional Intelligence with Academic Performance of Senior College Student	Dr. Tejpal Tukaram Jagtap Dr. Ghansham Balu Kamble	04
3.	तुम्हें बदलना ही होगा उपन्यास में दलित नारी	लक्षेश्वरी (शोधार्थी)	08
4.	Home : A Representation of dehumanization and trauma	Dr. Rajesh Vinayakrao Dandge	11
5.	राजभाषा कार्यान्वयन : प्रभावी प्रविधि	हरिकिशोर गुप्ता (शोधार्थी)	15
6.	Analysis of developing Agriculture sector through Financing by SBI (Ujjain Dist.)	Abhishikha Parmar (Research Scholar)	17
7.	Manipur Voilence and Lessons From Ambedkar's Experience with Media	Mr. Abhay Kumar	19
8.	Nanotechnology AANE WALA KAL	Dr. Manish Sharma	24

UGC Care Listed Journal
खाते का नाम – आश्वस्त (Ashwast)
खाते का नं.– 63040357829
बैंक – भारतीय स्टेट बैंक,
शाखा– फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 20/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 200/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 2,000/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 20,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेंगा।

अपनी बात

अपने समृद्ध वैचारिक संवाद तथा देश के ख्याति प्राप्त लेखको, चिंतकों, समाज वैज्ञानिकों की सक्रिय सहभागिता से भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय UGC Care Listed मासिक शोध पत्रिका ''आश्वस्त'' इस माह अपनी यात्रा के 25 वर्ष पूर्ण कर रही है। भक्तिकाल के संत कवियों से लेकर आधुनिककाल के कवियों, साहित्यकारों, लेखकों, चिंतकों के द्वारा अपनी लेखनी के माध्यम से शोषित एवं दलितों के प्रति होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष का जो स्वर बुलंद किया है, उसे आश्वस्त पत्रिका ने अपनी विकास यात्रा में समाहित किया है।

महाकारुणिक गौतम बुद्ध, संत कबीर, संत शिरोमणि रैदास, दादू दयाल, सहजोबाई, गुरु घासीदास, संत तुकाराम, महात्मा ज्योतिबा फुले तथा दलितों के मसीहा बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर से लेकर प्रत्येक उस व्यक्ति को इस बात का श्रेय जाता है जिसने समाज में व्याप्त सड़ी– गली मान्यताओं के आधार पर स्थापित की गई वर्ण और जातिगत अवधारणाओं और मनुष्य को मनुष्य से अलग करनेवाली ताकतों के विरुद्ध अपने–अपने स्तर पर विद्रोह किया तथा समाज के तथाकथित ठेकेदारों को खरी–खरी सुनाई। सामाजिक परिवर्तन का शंखनाद करती हुई ये हजारों सैंकड़ों कविताओं, कहानियों, लघुकथाओं, नाटकों, उपन्यासों, आत्मकथाओं के माध्यम से विस्तारित होती हुई समाज को सामाजिक न्याय की स्थापना के लिये चुनौती देती प्रतीत होती है।

प्रसन्नता है कि आश्वस्त हिन्दी मासिक पत्रिका का रजत जयंती अंक आपके कर कमलों में है। इस पत्रिका ने पूरे देश में लघु पत्रिका के रूप में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है तथा यह अपनी एक विशिष्ट पहचान को आधार प्रदान करने की दिशा में प्रयत्नशील है। विभिन्न विधाओं के माध्यम से दलित चेतना और दलित अस्मिता को जगाने व विकसित करने का काम कर रही है। तथागत गौतम बुद्ध से लेकर प्रज्ञासूर्य बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व की स्थापना एवं सामाजिक न्याय पर आधारित वर्णविहीन, वर्गविहीन, शोषण मुक्त समाज की रचना का तेवर लिये पत्रिका निरंतर चलते हुए सफलता के साथ इस मुकाम पर पहुंची है।

दलितोत्थान के लक्ष्य को दृष्टिगत रखते हुए डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी जी ने भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश उज्जैन की स्थापना कर ''आश्वस्त'' हिन्दी मासिक पत्रिका के संस्थापक–संपादक के रूप में साहित्य–सेवा आरंभ की। डॉ. सत्यप्रेमीजी ने गद्य और पद्य दोनों में समान रूप से लेखन कार्य किया है। वे दलित चेतना और दलित अस्मिता की अभिव्यक्ति की दिशा में प्रत्येक रूप में प्रतिबद्ध एवं सक्रिय रहे हैं। डॉ. सत्यप्रेमीजी ने दलित साहित्य के स्वरूप और परम्परा संबंधी संदर्भों को आश्वस्त पत्रिका के माध्यम से एक वैचारिक मंच प्रदान किया है तथा दलित साहित्य चिंतन के वैचारिक पक्ष को अपनी रचनाओं में उकेरा है। मनुवादी संस्कृति के विरोध में परिवर्तन का लक्ष्य लेकर दलित साहित्य आश्वस्त के माध्यम से अपना पक्ष प्रस्तुत कर रहा है, जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र विशेषकर सामाजिक, आर्थिक धरातल पर समता और न्याय की मांग करता है।

डॉ. सत्यप्रेमीजी ने स्वयं दलित जीवन जीया है और जीने के लिये पूरे स्वाभिमान के साथ संघर्ष किया है। साथ ही उन्होंने ऐसे जीवन को अन्यत्र–सर्वत्र भी देखा है और उसके हर कोण को समझा और जाना है। संघर्ष के पथ पर चलते हुए उन्होंने जो कुछ अनुभव किया उसे ही काव्यात्मक अभिव्यक्ति देकर उकेरा है। उनका कहना है–''जीना/महज सांस लेना ही नहीं/रोना और हंसना भी नहीं/वह जिहाद हो गया है।''

'आश्वस्त' हिन्दी मासिक पत्रिका अपनी विकास यात्रा के पड़ाव पार करते हुए वर्ष 2022 में UGC Care List में शामिल हो गई है तथा यह अपने कार्यक्षेत्र को विस्तारित करते हुए Peer Reviewed Referred Bi-linguan Monthly International Research Journal बन गई है। 23 सितम्बर 2023 को **आश्वस्त रजत जयंती महोत्सव** पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय–**दलित साहित्य और आश्वस्त की विकास यात्रा** है, इस एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश के विभिन्न प्रदेशों के साहित्यकारों, पत्रकारों, कवियों, समाजसेवियों सहित अनेकानेक अधिकारियों ने सहभागिता की।

आश्वस्त की इस विकास यात्रा में रचनात्मक सहयोग देने वाले समस्त रचनाकारों, पाठकों, विज्ञापनदाता– जनसंपर्क मध्यप्रदेश सहित समस्त आशीर्वाददाताओं, शुभ चिंतकों के प्रति आभार व्यक्त करती हूं। पत्रिका के मुद्रक प्रदीप यादव मालवा ऑफसेट उज्जैन व उनकी टीम को धन्यवाद देती हूं जिनके सहयोग से आश्वस्त समय से प्रकाशित होकर आप तक पहुंच सकी। साथ ही कानूनी सलाहकार खालिक मंसूरी एडवोकेट को भी धन्यवाद देती हूं जिन्होंने आवश्यकतानुसार समय–समय पर कानूनी/वैधानिक कार्यवाही सम्पन्न कराने में सहयोग व मार्गदर्शन प्रदान किया। पत्रिका की संपूर्णता में भाई दिलीप चौहान कम्प्यूटर आपरेटर के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता जिनकी टाईपिंग त्रुटि न के बराबर होने से समय व ऊर्जा की बचत होती है। साथ ही उन सभी महानुभावों के प्रति जिन्होंने प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से 'आश्वस्त' को इस ''रजत जयंती महोत्सव'' के पड़ाव तक की यात्रा कराने में सहायता की है आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझती हूं।

– डॉ. तारा परमार

The Relationship of Emotional Intelligence with Academic Performance of Senior college students

- Dr. Tejpal Tukaram Jagtap
- Dr. Ghansham Balu Kamble

ABSTRACT

Present research was commenced with the objective to discover the relationship between emotional intelligence and academic performance of college going students. The sample comprised of 100 college students studying in various colleges from Islampur, Sangli and Kolhapur city with age ranges from 18 to 20 years. Male female ratio was kept 1:1. Ss were selected using purposive sampling technique. Emotional Intelligence level of the students was measured by using Mangal's Emotional intelligence inventory and their previous year grade (percentage) was used to determined their academic performance. Further data was analyzed by the Mean, SD and Pearson's correlation. Result indicates that, there were substantial association was found between emotional intelligence and academic achievement for the present study.

Keywords : emotional intelligence and academic achievement

Academic achievement is the heart of the entire educational development. It is considered as a central goal of education. It refers to the skill attained in some specific area regarding academic work and degree of success. Achievement is an extremely important factor in personal progress when quality of performance becomes key factor. During the middle childhood years children confronted developmental task i.e., various intellectual and academic skills and the motivation to master them. Katyal and Bindra (1995) argued that academic achievement has become an indicator of individual's future in this highly viable world. Most of the times students are certain average or capabilities excel. As per academic concern the term achievement is refers to grade or marks obtained by students which is outcome of teacher's instructions as well students study.

There are many studies which stated that emotional intelligence has a significant role in the development of

academic performance (Malik and Shahid., Carolyn MacCann et al., 2020). Emotional intelligence can regulate persons emotions as well as it makes persons able to manage his/her as well as others emotion. Probably this is the reason people get success in their life.

Sample : A sample of 100 participant in which 50 were male and 50 were female from Islampur, Sangli and Kolhapur (Maharashtra) and nearby villages (50 rural; 50 urban). participants were assigned by purposive sampling technique for the present study and age range of Ss was varied 18 to 20 years.

Design for study : A Correlational design was adopted for the present study.

Statistical Treatment of the data :

Descriptive statistics namely the Mean and Standard Deviation and Pearson's Correlation coefficient were used for analyze the obtained data.

Aim : Main aim of the present study was to find out the relationship between emotional intelligence and Academic performance of Senior College students.

Objectives of the study : Following main objectives were framed for the present study :

1. To measure the level of emotional intelligence and Academic Performance of senior college students.

2. To find out the correlation coefficient between emotional intelligence and Academic Performance of senior college students.

Hypothesis :

To serve the objective of the study, following hypothesis is framed and tested. Assuming that other variables are kept constant.

H1. Emotional Intelligence will be strongly and positively associated to Academic Performance

Tools Used for Data Collection 1) Mangal's Emotional Intelligence Inventory: This inventory was constructed by S.K. Mangal and Subhra Mangal (2007). The four major factors of EI viz. a) intrapersonal awareness b) interpersonal awareness c) intrapersonal management, and d) interpersonal management is measured by this inventory. This scale contains 100 statements with two alternatives 'Yes' and 'No'. Reliability of this test by the split half is .89, by K-R formula 20 is .90 and by test-retest is .92. Validity of

the inventory is varied from. 437 to .716. 2) Academic Performance: For the present study, % age acquired in previous year by the students has considered as academic performance. Higher the percentage higher the academic performance score and vice versa.

Variables under study: A. Emotional Intelligence B. Academic Performance**.** Procedure : After selecting subjects, the tests were distributed to them. Before filling the tests, rapport was established with them and assure them that the identification and responses given by them was kept confidential and this information would not be disinterring anywhere, so they can give their responses comfortably and honestly.

After that the importance and purpose of the study was explained to them. The instructions were given them according to manual. After that the tests was given to them. After response booklets and answer sheets was collected from them.

RESULTS

Table 1 showed Descriptive statistics and 'r' value of Emotional Intelligence and Academic Performance.

Variables	*Mean*	*SD*	*N*	*r – value*	*df*	*Sig.*
Emotional Intelligence	68.55	8.22	100	.64	98	.000
Academic Performance	77.13	12.93				

Table 1 shows the correlation coefficients between emotional intelligence, and Academic Performance. It is perceived from the table that the coefficient of correlation (.64) between Emotional Intelligence (M= 68.55, and SD= 8.22) and Academic Performance (M= 77.13, SD= 12.93) of students is statistical significant (r (98) .64, p <.01). Therefore, it suggests that there is significant association exists between these two variables. Hence, the hypothesis which read as, Emotional Intelligence will be strongly and positively associated to Academic Performance, is accepted.

This result of the study is as per the expectancy for the reason that, high

emotional intellectual individuals are well self-regulated and their decision-making ability is quite good. Probably that is the reason they can do well in any kind of situation. However, these findings are coherent with those of Carolyn MacCann et al. (2020), Venkteshwar and Warrier (2016), Malik and Shahid (2016) they reported direct relationship between Emotional Intelligence and Academic performance and the EI increases GPA. There are also some studies which are inconsistent with current findings and argued that emotional intelligence and academic performance do not related to each other (Chen and Lai, 2015). These mixed previous findings suggest more studies should be undertaken to explore the relationship between these two variables.

CONCLUSIONS :

On the basis of statistical analysis, interpretation and discussion of data we could conclude that there were substantial association was found between emotional intelligence and academic achievement for the present study.

Limitation :

- The geographical area of study was restricted for Islampur, Kolhapur and Sangli city and nearby villages only.
- There are many variables that influence academic performance but in the present study emotional intelligence was taken into account only.
- A sample size of one hundred taken for the present study.

Suggestions for further study :

- There are wide ranges of variables that can influence academic performance but for the present study only emotional intelligence was taken into account. By taking some other variables such as academic self-esteem, procrastination, academic resilience etc. further psychological studies should be carried out to find out the factors that are responsible for observing academic performance.
- A large set of a sample from various cities should be taken.
- In future study some advance statistical techniques such as ANOVA, multiple correlation and regression analysis should be employ.

- Dr. Tejpal Tukaram Jagtap
& Dr. Ghansham Balu Kamble
Karmaveer Bhaurao Patil College,
Urun-Islampur, Dist-Sangli, Maharashtra.
Mob. 7020248713

References :

Carolyn MacCann, Yixin Jiang, Luke E. R. Brown, Kit S. Double, MicaelaBucich AmiraliMinbashian, (2020) Emotional Intelligence Predicts Academic Performance: A Meta-Analysis, Psychological Bulletin, American Psychological Association, 146(2), pp. 150-186, ISSN : 0033-2909 http://dx.doi.org/10.1037/bul0000219

Chen and Lai (2015) Personality Traits, Emotional Intelligence and Academic Psychology, Achievements of University Students, American Journal of Applied 4 (3-1), pp. 39-44. doi: 10.11648/j.ajap.s.2015040301.17

Malik and Shahid (2016), Effect of emotional intelligence on academic performance among business students in Pakistan, Bulletin of Education and Research, 38(1), pp. 197-208.

Venkteshwar and Warrier (2016) the relationship between emotional intelligence, personality and academic performance of net generation students, IOSR journal of business and management, 18(3), pp. 10-14, e-issn: 2278-487x, p-issn: 2319- 7668.

'तुम्हें बदलना ही होगा' उपन्यास में दलित नारी

– लक्षेश्वरी (शोधार्थी)

शोध सार

दलित स्त्रियाँ सदियों से पितृसत्तात्मक समाज द्वारा निर्मित परम्परा एवं संस्कृति की वाहक रही हैं। दलित नारी अपने साथ किये जाने वाले बर्बरतापूर्ण अन्याय, अत्याचार, शोषण, उत्पीडन एवं अनाचार को सहन करने के लिए वर्तमान समय में भी बाध्य हो रही हैं। सुशीला टाकभौरे ने दलित नारियों के जीवन के कटु सत्य, उपेक्षा, घुटन, पीड़ा, अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को बनाये रखने के लिए निरंतर उनके द्वारा किये जाने वाले संघर्षों को अपने भोगे हुए अनुभवों के माध्यम से यथार्थ रुप में चित्रित किया है। वर्तमान समय में भी दलित नारी के लिए उसकी जाति किस प्रकार से उसके शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शोषण का कारण बनती है इसका चित्रण लेखिका ने अत्यंत मार्मिक रुप में 'तुम्हें बदलना ही होगा' उपन्यास में व्यक्त किया है।

बीज शब्द – सुशीला टाकभौरे, तुम्हें बदलना ही होगा, दलित नारी, दलित अस्मिता, नारी–विमर्श।

मूल आलेख

सुशीला टाकभौर, दलित साहित्य के क्षेत्र में एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। भारतीय समाज व्यवस्था में दलित स्त्रियाँ सदियों से अपमानित, उपेक्षित, शोषित और समाज से बहिष्कृत की जाती रही हैं। दलित स्त्रियों की समस्याएं अन्य भारतीय स्त्रियों से भिन्न है। दलित स्त्रियाँ जातिगत, लिंगभेद, एवं आर्थिक इन तीन आधार पर शोषण की शिकार होती आ रही हैं। लेखिका ने दलित नारी, रुढ़िवादी विचार, अंध विश्वास, अशिक्षा के कारण शोषण की शिकार बनी, नारी जीवन में होने वाले अन्याय, अत्याचार की करुण कथा को वाणी प्रदान कर उसके दर्द, पीड़ा, घुटन को अपनी रचनाओं में अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। पुरुष प्रधान समाज में सारे अधिकार पुरुषों को ही प्राप्त थे, और इसी अधिकारों के कारण वह नारी को शोषित और पीड़ित करता आ रहा है। लेखिका स्वानुभूत अनुभवों के कारण दलित नारियों की व्यथा–कथा को बहुत अच्छी तरह से समझती हैं। लेखिका ने दलित स्त्री की समस्याओं एवं सामाजिक यथार्थ को 'तुम्हें बदलना ही होगा' उपन्यास में चित्रित किया है।

उपन्यास की नायिका महिमा एक दलित स्त्री है। महिमा नौकरी की तलाश में भटकती रहती है। किसी तरह से ज्ञात होने पर वह शान्ति निकेतन महाविद्यालय में अनुसूचित जाति के कोटे पर अपना आवेदन फार्म जमा करती है। परंतु सवर्ण समाज के लोग नहीं चाहते

थे कि शान्ति निकेतन महाविद्यालय में अनुसूचित जाति के लोग नौकरी के लिए आये। शान्ति निकेतन महाविद्यालय में कार्यरत समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी यथाशक्ति प्रयत्न करते कि उस संस्था में नॉन टीचिंग हो या टीचिंग सभी ब्राह्मण हो इसलिए बड़ी ही सूझ–बूझ के साथ उस पद में सवर्ण जाति की महिला को पदस्थ कर दिया जाता है। नौकरी के संबंध में जानकारी मांगने पर महिमा से रजिस्ट्रार कहता है–'वह इन्टरव्यू तो हो चुका है। उस पोस्ट के लिए तिवारी मैडम का अप्वांइटमेंट हो चुका है।"[1] सभ्य और सवर्ण समाज के द्वारा एक दलित स्त्री के अधिकार को बड़े ही होशियारी और चलाकी के साथ छिना जाता है। लेखिका ने दलित नारी के साथ किस प्रकार से सवर्ण समाज के लोग अपनी अहम् भावना के कारण छल कपट कर उसके अधिकारों का हनन् करते है इसका सजीव चित्रण किया है।

भारतीय समाज में प्राचीन समय से जाति का भेदभाव चला आ रहा है। महिमा के काफी मेहनत के बाद शान्ति निकेतन महाविद्यालय में अनुसूचित जाति के कोटे पर नौकरी लग जाती है, पर वह बार–बार अपनी जाति के कारण अपमानित होती रहती है। महाविद्यालय में हर कोई महिमा के साथ बुरा व्यवहार करते थे। महाविद्यालय में ध्वजा रोहण के लिए रघुजी नगर के प्रसिद्ध वैद्यराज पंड़ित त्रिपाठी को बुलाया गया था। कार्यक्रम के बाद सभी प्राध्यापकों का परिचय कराया गया लेकिन महिमा का परिचय उसकी जाति के नाम से कराते हुए उप प्राचार्य शास्त्री मैडम ने कहा–'पंड़ित जी, महिमा हमारे महाविद्यालय की अच्छी प्राध्यापिका है। बस, दुख की बात यह है कि वह निम्न वर्ण की चमार जाति में पैदा हुई है। 'यह मायावती बहनजी की बहन, हमारे बीच रहकर, हमारी ही नाक काट रही है।'[2] स्टॉफ में भी सभी महिमा से उसकी जाति के कारण घृणा एवं अपमान करते थे।

वर्तमान समय में भी अन्तरजातिय प्रेम विवाह एक समस्या बनी हुई है। विवाह चाहे प्रेम विवाह हो या सामाजिक रीति–रीवाज से सम्पन्न हो हर समय और हर जगह पर नारी को सामांजस्य स्थापित करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। इसलिए नारी मुक्ति और नारी समानता, नारी अधिकार की बातें करने वाला चमन लाल बजाज भी महिमा भारती के समक्ष अन्तरजातिय प्रेम विवाह से पहले शर्त रखते हुए कहता है कि – 'विवाह के बाद आपको प्राध्यापिका की नौकरी छोड़नी पड़ेगी। आप जानती हैं, मेरी पत्नी साधारण प्राध्यापिका की नौकरी करे, यह मेरे मान–सम्मान के विरुद्ध है।'[3] पुरुष को अपने पुरुषत्व पर गर्व रहता है इसलिए नारी शिक्षा और नारी मुक्ति का हिमायती चमन लाल का नारी के प्रति परम्परावादी दष्टिकोण स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है।

समाज में आज भी छुआछुत, भेदभाव कायम है भले ही यह सैद्धांतिक रुप में तो नहीं पर व्यवहारिक रुप में दिखाई देता ही है। इसलिए महिमा से कोर्ट मैरिज करने के बाद भी चमन लाल बजाज का परिवार स्वीकार नहीं करता है। नारी मुक्ति आंदोलन चलाने वाला स्वयं चमन लाल बजाज के मन में भी जात–पात का भेदभाव समाया हुआ था और महिमा भारती को ब्राम्हण जाति की समझ कर विवाह किया था। महिमा को बजाज परिवार में बहू के रुप में स्वीकार नहीं करने पर महिमा की जाति के प्रति चमन लाल अपनी अज्ञानता प्रकट करता है तब उसके पिता कहते हैं–'क्या बावले जैसी बातें कर रहे हो? जमाना गांधी जी का हो या अम्बेडकर का, मगर जातपांत तो समाज में रहेगी न। हम बजाज मारवाड़ी बनिया परिवार के हैं, तो बजाज ही कहलायेंगे। वह लड़की भारती कहलाकर ब्राम्हण नहीं बन सकती, यह तुम नें क्यों नहीं सोचा?"[4] समाज में अभी भी भेदभाव और जातिवाद समाया हुआ है। चमनलाल बजाज की माँ कहती है कि–'निर्बल हों या न हों मगर मैं चमार जाति की लड़की को अपनी बहू कैसे मानूं, समाज में हमारी क्या इज्जत रहेगी।"[5] चमनलाल बजाज का पिता अपने परिवार, अपनी मान मर्यादा को बचाने के लिए महिमा को अपने परिवार के जीवन पथ से हटाने के विषय में कहते हैं तब कानून और न्याय व्यवस्था के भय

से चमनलाला के बड़े भाई मध्यम मार्ग का उपाय बताते हैं–तुम्हें मेहमान खाने में ही रहना होगा। तुम हवेली में पूरे परिवार के साथ नहीं रहोगे। तुम्हारी पत्नी हवेली में कभी कदम रखने की हिम्मत नहीं करेगी। हमारे चौके चूल्हे को वह भ्रष्ट नहीं करेगी। अपने सवर्ण जाति समुदाय में उसे तुम कभी नहीं ले जाओगे। उसके अछूत रिश्तेदारों को कभी अपने घर नहीं आने दोगे। उसकी जाति के विषय में कभी किसी को नहीं बताओगे। सबसे पहले 'आर्य समाज पद्धति से उसका और अपना शुद्धिकरण करवाओगे।"[6] सभ्य समाज के लोगों को अपने मान सम्मान की चिंता रहती है। सवर्ण समाज दलित स्त्री को मानवी नहीं मानते उनका दुख–दर्द उन्हें दिखाई नहीं देता है। सवर्ण समाज की नजरों में दलित नारी की कोई इज्जत नहीं होती है, हमेशा दलित नारी के साथ छुआछूत, भेदभाव के साथ उसका अपमान भी किया जाता है –'अभी भी छुआछूत, भेदभाव के साथ हमारा अपमान किया जाता है। दलित अछूतों को अभी भी पशुओं से भी निम्न समझा जाता है।'[7] दलित नारी, नारी और दलित होने के कारण दोहरी मार झेलने को बाध्य होती है उनके जीवन को अधिक कष्टमयी बना दिया जाता है–'समाज व्यवस्था में स्त्री मनुवादी लिंगभेद से पीड़ित है। पुरुष शोषित–पीड़ित रहकर भी, अपनी स्त्रियों को अन्याय और शोषण का शिकार बनाते हैं।"[8] रुढ़िवादी मानसिकता एवं विचारधारा वाले सवर्ण समाज में दलित नारी का जीवन अत्यंत कष्टदायी है। नारी सशक्तिकरण, नारी मुक्ति के हिमायती होने के बावजूद भी चमनलाल बजाज अपनी पत्नी महिमा को बंधन में जकड़कर रखता है। लेखिका ने सामाजिक शोषण से उत्पन्न वेदना का चित्रण किया है।

निष्कर्ष

लेखिका ने उपन्यास में दलित नारी के प्रति समाज का यथार्थ एवं कटु सत्य और नारी के उच्च जीवट शक्ति को चित्रित किया है। सवर्ण समाज ने जातीयता के बीज बोकर, दलित नारियों को अछूत कह कर उनके जीवन को नरक तुल्य बना दिया है। दलित नारी की समस्याओं, बिडंबनाओं और उसके दोहरे संतापों को उपन्यास में सजीव रुप में अभिव्यक्त किया है। दलित नारी का जीवन, उसकी स्थिति भारतीय समाज व्यवस्था के कारण हमेशा से उत्पीड़नकारी रहा है। दलित नारियों की योग्यता को जातिगत भेदभाव के कारण भी निम्न कोटि का ही माना जाता है और उनके अधिकारों को छिन लिया जाता है, जिसकी वजह से नारी शोषण की शिकार होती आ रही है। दलित स्त्रियों के प्रति सवर्ण समाज द्वारा किये जा रहे भेदभाव की राजनीति को समझने की जरुरत है। स्त्री–पुरुष भेदभाव की परंपरागत मान्यताओं का विरोध कर परम्परिक विचारधाराओं में परिवर्तन लाने और उनको समान अधिकार देने की आवश्यकता है तभी दलित नारियों का सही मायने में विकास हो पायेगा और उनका जीवन कष्ट मुक्त हो जाएगा ।

– लक्षेश्वरी, शोधार्थी,
शासकीय बिलासा कन्या पी. जी. महाविद्यालय,
बिलासपुर (छ.ग.)
डॉ. हरिणी रानी आगर, शोध निर्देशक,
शासकीय बिलासा कन्या पी. जी. महाविद्यालय,
बिलासपुर (छ.ग.)
मोबा. 9584209475

संदर्भ :

1. सुशीला टाकभैरे, तुम्हें बदलना ही होगा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृ.सं. 23
2. वही पृ.सं. 76
3. वही पृ.सं. 113
4. वही पृ.सं. 154
5. वहीपृ.सं. 127
6. सुशीला टाकभैरे, वह लड़की, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017, पृ.सं. 130–131
7. वही पृ.सं.
8. वही पृ.सं. 170

Home: A representation of dehumanization and trauma

- Dr. Rajesh Vinayakrao Dandge

Abstract :

Home, the novel by Toni Morrison explores the theme of dehumanization, focusing on how racism, violence, and trauma can strip individual's dignity and humanity. Through the story of protagonist Frank Money, a Korean War veteran who returns to his hometown in Georgia, Morrison exposes the devastating impact of dehumanization on both the individual and the community. The present paper argues that Morrison's use of vivid, powerful imagery and poetic language serves to highlight the dehumanizing effects of discrimination, oppression, and trauma. By examining Frank's journey from victim to survivor, Morrison illuminates how people can reclaim their humanity and heal from the wounds inflicted by dehumanization.

Keywords : Dehumanization, Trauma, Racism, Identity Experiences of violence, Racial prejudice.

An African American novelist, essayist, and editor, Toni Morrison was born in Lorain, Ohio in 1931. Morrison is one of the authoritative voices of black literature who explores the experiences of African Americans, particularly black women, and the effects of racism and oppression through her novels and literary works. Morrison's writing is characterized by its lyrical prose, complex characters, and exploration of themes such as identity, trauma, and the search for home and belonging. Her remarkable contribution to the world of literature was appreciated by honouring her the Nobel Prize in Literature in 1993, making her the first African American woman to win the award.

Dehumanization is the process of depriving a person or group of people of the status of mere objects, often for manipulation or exploitation (Dehumanizatio-Is-The-Process-Of- Depriving). According to Meriam webster's dictionary dehumanization is "to deprive (someone or something) of human qualities, personality, or dignity." (n. p.) Dehumanization, is a complex and deceptive process that can have serious consequences for

individuals and societies. It typically involves reducing the inherent worth and dignity of a person or group by denying or attacking their essential human qualities. This can be done through language, behaviour, or social and cultural practices.

Home (2012) is Morrison's tenth novel, which narrates the story of a Korean War veteran's quest to save his younger sister, according to the publisher's description. When asked about her intention for writing this novel, Morrison expressed in multiple interviews her desire to challenge the perception of purity and tranquillity of the 1950s and expose the negative aspects of the decade, dismissing the notion that it was a comfortable time. She was particularly concerned about the Vietnam War, which was not officially recognized as a war, but resulted in the deaths of fifty-eight thousand people, a dark side of the War. With this perspective, Morrison explores the theme of dehumanization through the story of a young black man named Frank Money, who returns home after serving in the Korean War. Throughout the novel, Morrison depicts the various ways in which Frank and other characters are dehumanized, including racism, trauma, and prejudice.

The novel from the first page exposes the harsh realities of dehumanization. The lynching of Crawford, who refused to leave his house despite threats from white men, is described in brutal detail: he was "beaten to death with pipes and rifle butts and tied to the oldest magnolia tree in the country—the one that grew in his own yard" (Home 9). This scene serves as a glimpse into the violent and unjust treatment that black Americans faced during this time. By depicting such brutality early on, Morrison sets the stage for the themes of trauma and dehumanization that are explored throughout the novel. Cowford's dead body is thrown into a dug, instead of respectfully burial. "We saw them pull a body from a wheelbarrow and throw it into a hole already waiting" (18). The humiliating burial of Cowford's body, thrown disrespectfully into a hole instead of being buried with respect, symbolizes the loss of human dignity that African Americans have

experienced at the hands of unjust white racists.

There are instances of medical experiments carried out on African Americans during the 1950s by white doctors. These experiments were a part of social experiments conducted on the black population, which was not wanted by white society, and the aim was to restrict their reproduction. Cee, Frank sister, goes through this experiment and becomes infertile, "Your womb can't never bear fruit." Miss Ethel Fordham told her that." (86).

Morrison depicts another example of the medical experimentation and its brutality through the character Reverend John Locke who observes and shares with Frank: "Well, you know, doctors need to work on the dead poor so they can help the live rich" (11). Locke suggests that doctors use the bodies of deceased individuals who were poor to further their medical knowledge and improve their skills, with the ultimate goal of benefiting wealthier individuals who are still alive. It also implies disregard for the dignity and value of the lives of poor individuals, as their bodies are seen as a means to an end for the benifit of wealth. This attitude is reflective of the systemic injustices and inequalities present in society.

Schreiber, E. J. (2010) in his book Race trauma and home in the novels of Toni Morrison explores how the collective and individual trauma of slavery, which has been ingrained in the bodies and minds of its victims, continues to affect subsequent generations of African Americans. The lynching of Cowford is narrated by Frank's father and the story of this trauma is carried by Frank who tries to erase these memories, and also finds healing through the act of giving Cowford an honourable burial at the end of the novel. Cowford's burial is deeply ingrained in Frank's mind, and it is not until he and his sister Cee exhume the body and give it a proper burial that he can begin to move on from the trauma.

Frank's other traumatic experience in the field of Korean War is the death of his dear friends Mike and Stuff conveys the emotional impact of the event on him, and he seems to be overwhelmed and traumatized by the repeated experience of loss and helplessness, "I

dragged Mike to shelter and fought of the birds but he died anyway(69).” These striking memories of loss of best friends, presents a distressing and disturbing account of the Frank Money.

Thus, the incident offers a raw and emotional glimpse into the psychological toll of experiencing repeated trauma and loss, and the feeling of powerlessness that can result from being unable to save those we care about. The message contained in the letter about his sister Cee, "She be dead" (69) shatters him about futile attempt to save their friends' life, holding and talking to him for an hour, and even finding and retrieving a severed arm in the hopes that it could be reattached. Despite his efforts, the friends ultimately died. The speaker then expresses their exhaustion and unwillingness to watch anyone else close to die.

Frank Money arrives at Reverend John who grasps Frank as a soldier of the integrated army and acknowledges the mistreatment that soldiers face. He states, "An integrated army is integrated misery. You all go fight, come back, they treat you like dogs. Change that. They treat dogs better" (18). The statement suggests that integrating different races and ethnicities into a single military unit is inherently problematic and leads to negative outcomes. And also treated worse than animals.

Racial segregation is a harsh reality that denies human equality. The segregation incident was experienced by Frank's girlfriend, Lily, who was denied the opportunity due to her skin colour. Despite working hard as a seamstress at a dry cleaner, the woman at the agency told her that there were "restrictions" (50) on the houses she could buy, without explicitly stating that it was because of her race. Morrison highlights how racial discrimination was covertly institutionalized through policies that excluded people of colour from certain neighbourhoods and homes. This exclusion was often based on deep-seated stereotypes and prejudice, which upheld white supremacy and prevented people of colour from achieving upward mobility.

Through portrayal of the experiences of Frank and other characters, Morrison argues

that dehumanization is the result of larger social and cultural forces, but that it is possible to reclaim one's humanity through connection and self-discovery. This novel offers a message of hope and

resilience in the face of dehumanization and provides a powerful critique of how racism and violence can dehumanize people.

- Dr. Rajesh Vinayakrao Dandge
Asst. Professor in English
Karmaveer Bhaurao Patil College
Urun- Islampur, Tal. Walwa
Dist. Sangli (MH)
Mob No. 7972259047

References :

Bouson, J. Brooks. Review of Race, Trauma, and Home in the Novels of Toni Morrison. MFS Modern Fiction Studies, vol. 58 no. 1, 2012, p. 155-158. Project MUSE, doi:10.1353/mfs.2012.0012. web.

Cutter, Martha J., and J. Brooks Bouson. "Quiet as It's Kept: Shame, Trauma, and Race in the

Novels of Toni Morrison." African American Review 35.4 (2001): 671. African American Review. Web.

"Dehumanize." Merriam-Webster.com Dictionary, Merriam-Webster, https://www.merriam-

webster.com/dictionary/dehumanize. Accessed 16 Dec. 2023.

Morrison, Toni. Home. New York, Toronto, Alfred A. Knopf, 2012. Print.

Morrison, Toni. "Toni Morrison Home: In Conversation with Torrence Boone." By Torrence

Boone. YouTube. Talks at Google. 27 Feb.2013. Web. 15 Dec.2022. Schreiber,

Evelyn Jaffe. Race, Trauma, and Home in the Novels of Toni Morrison.

Washington D. C, LSU, 2010.Web.

राजभाषा कार्यान्वयन : प्रभावी प्रविधि

– हरिकिशोर गुप्त (शोधार्थी)

भाषा हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम है। हम अपने भाव, विचार और अभिव्यक्ति को अपनी भाषा के सहयोग से न सिर्फ बता पाते हैं बल्कि समझा भी पाते हैं। भाषा सिर्फ हमारे आम जीवन ही नहीं बल्कि हमारे कार्यालय भी अहम भूमिका निभाती है। कार्यालय में संचार का महत्वपूर्ण माध्यम भाषा ही है। एक समान, सहज, सरल भाषा के उपयोग से किसी भी संस्थान की संगठनात्मक एकता बढ़ती है। ऐसे में एक ऐसी भाषा की आवश्यकता होती है जो आसानी से पढ़ी, लिखी, बोली और समझी जा सके और यह सब खूबियाँ हमारी अपनी भाषा, हिन्दी में है।

केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की आवश्यकता और अनिवार्यता को ध्यान में रखते हुए कार्यालय में राजभाषा के प्रचार–प्रसार और प्रयोग को बढ़ावा तो मिला है किन्तु कुछ कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ता है। ऐसे में कार्यालय में राजभाषा को बढ़ाने और इसे अधिक प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित संसाधनों और प्रविधियों का प्रयोग किया जा सकता है :

प्रशिक्षण कार्यक्रम :

कार्यालय के कर्मचारियों के लिए नियमित रूप से विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों जैसे प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ और पारंगत प्रशिक्षण में नियमित रूप से कार्मिकों को नामित करना, अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम में कार्मिकों का नामांकन, हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामांकन और सबसे ज्यादा प्रभावी और कारगर होता है नियमित रूप से राजभाषा कार्यशालाओं का आयोजन। इसके माध्यम से, कर्मचारियों को हिंदी के व्यावहारिक ज्ञान, वर्णमाला, व्याकरण, और आवश्यक शब्दावली को सुधारने का अवसर तो मिलेगा ही साथ ही साथ हिन्दी में काम करने में उनकी झिझक भी कम होगी।

प्रोत्साहन और पुरस्कार :

राजभाषा कार्यान्वयन अपनी शुरुआत से ही प्रेरणा और प्रोत्साहन पर आधारित रहा है। आज भी सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएँ चलाई जा रही हैं। राजभाषा के प्रयोग के प्रति कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें सम्मानित और पुरस्कृत करने का प्रयास किया जाना चाहिए। कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने के लिए कई अन्य तरह के प्रोत्साहनों पर विचार किया जा सकता है। जैसे पदोन्नति में कार्मिक द्वारा हिन्दी में किए गए कार्य को वरीयता, प्रमुखता या अंक प्रदान करना।

बैठकों में संवाद :

यह मानव की प्रकृति है कि अगर कोई भी चीज उसकी आदत में आ गई तो वह उसे बिना कहे भी निभाता रहता है। राजभाषा के प्रयोग में हिन्दी के प्रयोग को भी कार्मिकों की आदतों में शामिल करना एक प्रमुख कदम है। एक समय में जब केवल हस्ताक्षर हिन्दी में करना अनिवार्य सा हो गया था तो आज भी आदमी सहज भाव से बिना किसी रुकावट के हिन्दी में ही स्वतः हस्ताक्षर करता है क्योंकि यह अब उसकी आदत में आ गया है।

कार्यालयों में बैठकें अब आम बात हो गई हैं। ज्यादातर कार्यालयों में दिन की शुरुआत और दिन की समाप्ति बैठकों से ही होती है। यदि यह सभी बैठकें हिंदी में ही हों और सभी कार्मिकों को हिंदी में ही अपनी बात रखने या चर्चा करने की आदत डाल दी जाए तो हिन्दी का प्रयोग सभी के लिए सहज हो जाएगा।

हिंदी शब्दकोश की उपलब्धता :

हम किसी काम को करने में तभी असहज होते हैं जब हमें उसकी जानकारी नहीं होती या उसके संसाधन उपलब्ध नहीं होते। जब हम कार्यालय में किसी कार्य को स्वतः करने की बजाए अंग्रेजी से हिन्दी या हिन्दी से अंग्रेजी में करने की शुरुआत करते हैं तो शब्दकोश की अनिवार्यता हो जाती है। पूर्व में अंग्रेजी में किए गए किसी कार्य को हिन्दी में करना हो, अंग्रेजी में प्राप्त पत्र, रिपोर्ट या किसी अन्य विषय को हिंदी में करना हो तो शब्दकोश बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। यह हिंदी में शब्दों को और वाक्यों के अर्थ को समझने और उन्हें अन्य भाषाओं में अनुवाद करने में सहायक हो सकेगा। आज विभिन्न विषयों के अलग–अलग शब्दकोश बाजार में उपलब्ध हैं और तो और कई सारे शब्दकोश तो भारत सरकार द्वारा भी अत्यधिक सस्ते दामों में उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त ऑन–लाइन शब्दकोश भी एक अच्छा विकल्प है।

अनुवाद सेवा :

कार्यालय में अंग्रेजी के विभिन्न दस्तावेजों और संदेशों को हिंदी में अनुवाद करने की आवश्यकता तो होती ही है और कभी–कभी समय की कमी और विषय की अनभिज्ञता के कारण इनका अनुवाद कार्य कार्मिक को कठिन लगने लगता है तो वह इसे वैसे ही छोड़ कर अंग्रेजी में ही कार्य करने लगता है। ऐसे में एक अनुवाद सेवा शुरुआत इस दिशा में कारगर होगी। इसके लिए कार्यालयों में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की सहायता से विषय विशेषज्ञों को शामिल करते हुए अनुवादकों का पैनल बना कर इसकी शुरुआत की जा सकती है। इसके तहत कार्यालय की मुख्य जानकारी और सामग्री को हिंदी में अनुवाद उपलब्ध करा देने से कर्मचारियों को हिंदी में सामग्री का उपयोग करने में आसानी होगी और राजभाषा के प्रति उनकी रुचि और संवेदनशीलता भी बढ़ पाएगी।

कार्यालय में तकनीकी और सूचना प्रौद्योगिकी का समावेश :

कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने कंप्यूटर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और अन्य तकनीकी साधनों के माध्यम से राजभाषा के प्रचार–प्रसार में सहायता मिलेगी। कार्यालयों में राजभाषा के प्रभावी प्रचार के लिए ऑनलाइन संसाधनों, जैसे ट्यूटोरियल, वीडियो, आर्टिकल, और ई–बुक्स प्रदान किए जाने चाहिए। इससे लोगों को हिंदी में तकनीकी ज्ञान का

उपयोग करने में सहायता मिलेगी और हिंदी भाषा का प्रचार बढ़ाया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त हिंदी में टेक्नोलॉजी संबंधित सम्मेलनों, सेमिनारों, और समारोहों का आयोजन भी इसके प्रयोग में सहायक होगाद्य इन उपायों के माध्यम से, हिंदी भाषा का प्रचार कंप्यूटर। और अन्य तकनीकों के माध्यम से बढ़ाया जा सकता है। यह लोगों को हिंदी में संचार करने, समझने, और बनाने के लिए उपयोगी होगा और हिंदी भाषा के उपयोग को प्रोत्साहित करेगा। यह उपाय हिंदी भाषा को प्रशासनिक और तकनीकी उपयोग के क्षेत्र में आगे बढ़ाने में मदद किया जाना चाहिए।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने भी कार्यालयों में सफल राजभाषा कार्यान्वयन हेतु 12 प्र की रणनीति रूपरेखा तैयार की है :

1. प्रेरणा
2. प्रोत्साहन
3. प्रेम
4. प्राइज या पुरस्कार
5. प्रशिक्षण
6. प्रयोग
7. प्रचार
8. प्रसार
9. प्रबंधन 10. प्रमोशन
11. प्रतिबद्धता और
12. प्रयास

अतः किसी भी कार्यालय में प्रेरणा, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रोत्साहन, पुरस्कार, प्रयास और प्रतिबद्धता से राजभाषा का व्यापक प्रचार एवं प्रसार किया जा सकता है।

– हरि किशोर गुप्त (शोधार्थी)
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
वडोदरा (गुजरात)
मोबा. 9408495989

Analysis of developing Agriculture Sector through financing by SBI (Ujjain Dist.)

(Devi Ahilya V.V. Indore, Madhya Pradesh)

- Abhishikha Parmar (Research Scholor)

Abstract :

Agriculture is based on the lending policies of the commercial banks in India. The State bank of India has being means and medium to the agricultures for development of land or any other agriculture purpose. Now a days mordern technology in the agriculture fields a huge capital is required due to this the State Bank of India plays an important role by providing adequate finance.

Keyword : Agriculture , SBI, Disbursment.

Introduction :

Indian's gives high priority to agriculture because majority of the population live in rural areas and depend on farming and its allied activities agriculture loans are any loans that are availed by a farmer to find seasonal agriculture operation or related activities like animal farming pisci - culture or purchase of land or agriculture tools.

Review of Literature :

(1) Alagunju (2007) agricultural credit is the route of obtaining the

command over the use of the money, goods, and services in the present in exchange for a promise to reply at future date.

(2) Das (2013) revieuled that the State Bank of India has set up the agri-business unit to give special focus on agricultural lending and there are agro-specialists in various disciplines to handle project guide farmer in their agri-venture.

Methedology

The present study is only based on secondary data. All data is collected from the books, publication, records by the bank, website etc.

Objectives :

(1) To study agricultural credit disbursment.

(2) To study the SBI performance in agricultural finance.

Scale of Finance

Table 1 : Agriculture Disbursment and achievement by SBI

Year	No. of A/c	Amount	Achievement
2018	21213	52.15	112%
2019	27183	53.14	105%
2020	22023	57.72	116%
2021	22326	58.08	112%
2022	23258	58.58	118%

Government fixes agricultural credit disbursment target for the banking sector every year and banks have consistently surpassed these targets.

The details of agricultural credit target fixed by the govt. and the achievement by the banks reported by National Bank for Agricultural.

State Bank of India succeeded in achieving the targets of dis-bursment SBI has been a pioneer and a market leader in agricultural-financing in India with portfolio of over Rs. 120,000 cr. in agricultural advances that covers more than 1.1 lakh farmer and their families.

Recommendation :

(1) Along with achieving the target bank should provide need based service to the customer.

(2) Agriculture activities are time specific and weather specific, so the delay in sanction and disbursment of loan amount should be avoided.

(3) The bank has arrange awarness programme about schemes of agri - loan and sanctioning procedure.

Conclusions :

(1) The SBI has given special input on agriculture finance in pursuance of the instruction and guidelines issued by the Reserve Bank of India.

(2) Due to the proper utilization of agriculture loan provide by bank, the

economical condition of farmer has been remarkable improved .

(3) Agriculture finance and its policy of the bank has play very vital role in the development of the agriculture and farmer.

- Abhishikha Parmar
Mob. 8319634382

References :

1. Annual reports of State Bank of India.
2. SLBC, Madhya Pradesh Site.
3. State Bank of India Manuals.

MANIPUR VIOLENCE AND LESSONS FROM AMBEDKAR'S EXPERIENCE WITH MEDIA

-Mr. Abhay Kumar

ABSTRACT

The present article primarily discusses the recent turmoil in the northeastern state of Manipur that may also be called an ethnic dispute amongst the population. Primarily this article traces the failure of media to properly showcase the issue and this situation is compared with the life and struggle of Baba Saheb Ambedkar and how he has also faced similar situation by being from a marginalised community and not getting proper representation in the media despite the fact that his work travelled way beyond what media could have shown.

HISTORY OF THE DISPUTE IN MANIPUR

• Ethnic conflict between the Kuki tribal group from the hills in Manipur and the Meitei people, who make up the majority in the Imphal Valley, broke out on in the month of May 2023 in the north-eastern state of Manipur in India.

• The present violence started after the Manipur High Court directed the state government consider giving the Meitei community, which makes up the majority of the population in Manipur, Scheduled Tribe status. The Meitei would have enhanced access to advantages, including reserved seats in government, under this status, which would guarantee protection under the Indian Constitution.

• The Meiteis are descended from the region's royalty, and many of them benefit from government quotas under at least three other categories - Scheduled Caste, Other Backward Castes, and Economically Weaker Section - all of which are affirmative

action programmes run by the Indian government for the historically marginalised. Moreover, the Meiteis are by and large hindus by belief whereas, Kuki tribe, along with the Nagas, are predominantly Christian and the Meiteis' insistence on being classified as Scheduled Tribe has led to resistance from the Kuki and Naga tribes, triggering the ongoing violence.

• This led Kukis to adopt the means of violence to protest and raise their voices. While it is possible to pinpoint the present protests as the immediate cause of violence in Manipur, but tensions within the state's indigenous communities had been building for some time. For example, the Kuki people, who predominantly reside in the hill regions surrounding the capital valley, have been viewed as being the target of the present state government's treatment of Indigenous land rights concerns. There have been evictions in Kuki communities as a result of efforts to survey reserved forests in the hill regions, which were ostensibly made to stop the cultivation of poppies.

LACK OF MEDIA COVERAGE

• The small Indian state of Manipur has been engulfed in ethnic conflict as the two largest groups, the majority Meitei and the minority Kuki, fight for control of territory and influence. The most important topic that India's mainstream media, particularly television, did not sufficiently cover was Manipur. There were, of course, exceptions. However, the majority of the most watched channels hardly mentioned it.

• For a long time, mainstream media in India ignored the Manipur conflict, only covering it after a viral video appeared showing two naked women being paraded by a mob. Major newspapers and broadcast media from Manipur and the rest of India have avoided reporting on violence faced by the Christian-majority Kukis, while highlighting violence by Kuki militants.

• Better was print media. However, one can include the publications that made Manipur a priority in their news coverage. Even if the comment pages did contain pieces by professionals and academics, the detailed reporting that can only be done with boots on the ground was generally absent.

• The only time Manipur appears on the front pages is when a significant politician is involved. Thus, the late visit to Manipur by home minister Amit Shah at the end of May made headline news. And later on, Rahul Gandhi visited Manipur, despite the fact that most of the coverage of his visit has centred on the police barring him from reaching there by road and BJP spokespersons criticising him for his "insensitivity" on the date of the visit. That is the reason People from across the globe are asking for the national leadership to take responsibility and try to ease the situation in Manipur.

PRESENT SITUATION IN MANIPUR

• The state machinery has failed to protect its people from the violence which has broke down in Manipur, the central government gradually deployed security forces from other parts of India to help quell the unrest. Placed under state government command, these contingents largely failed to stop the violence, however, as Meitei groups, in particular, obstructed their movements by blocking – and even digging up – roads.

• Just as the Kuki do not trust the Meitei-dominated local police, the Meitei allege that

the central forces, particularly a counter-insurgency force called the Assam Rifles, are biased toward the Kuki.

• The situation remains the same and the tension in the valley is at its peak, the entire population is left groping in the dark with a hope that thing will change but almost three months have passed but the issue remains unaddressed.

LESSONS TO BE LEARNT FROM AMBEDKAR'S EXPR-EIENCE WITH MEDIA

• Journalist success was another accomplishment of Dr. Ambedkar. By publishing his papers, he gave the social revolution a platform. Important to remember is that Gandhi founded Harijan in 1933 to advance the cause of the untouchables only after the Poona Pact. The Indian media never mentions Ambedkar's labours, which are the reason his people have four newspapers today, despite the fact that they applaud Gandhi's efforts to launch a newspaper for the untouchables.

• Ambedkar is a prominent figure in the country. He is, nonetheless, portrayed as a dalit leader. The development of social identity is greatly influenced by the media. Ambedkar is never referred to as anything other than a dalit leader. Since his fight for social justice began and even now, after the occasion of his 100th birthday, Ambedkar has gotten less attention from the Indian media. Ambedkar believed that the Indian media marginalised his viewpoints.

• We must have learnt from our past experiences that the one-sided, solicitous, and imbalanced broadcast of information will continue as long as every segment of society does not have enough representation in the media. Ambedkar urged Dalits to develop their own media outlets to address this inequality. Only Dalit journalism, in his opinion, could combat the oppression Dalits endured.

• We can identify the ideology, the bias, the partiality of the newspaper towards any issue, by observing the placement, the space and the usage of language of that content. If we investigate the news about Ambedkar by using the above variables, those newspapers had not given importance to him.

• By examining the positioning, the layout, and the language used in that article, we can determine the ideology, bias, and partiality of the newspaper towards any issue. If we use the aforementioned variables to analyse the news on Ambedkar, we find that the newspapers did not place much emphasis on him and on the afforesaid application we can construe that the same is happening towards this national crisis which is occurring on a regular basis in Manipur.

• The newspapers at the time in no way supported Ambedkar's battles and the same is the case with the peoples of Manipur. They didn't portray his hardships in an unbiased and honest manner. Newspapers painted Ambedkar as a traitor when he argued in favour of his people's political rights at the Round Table Conference. They made no connection between this and the issues facing the oppressed people. They refused to consider this matter from the standpoint of the oppressed people. The news was compiled from

the viewpoint of the upper caste.

• In Marxist media analysis, media institutions are regarded as being 'locked into the power structure, and consequently as acting largely in tandem with the dominant institutions in society. The media thus reproduced the viewpoints of dominant institutions not as one among a number of alternative perspectives, but as the central and “obvious" or "natural" perspective'. The Indian newspapers too reproduced the viewpoints which would sooth their financial Interest and, in a way, allign to the ideologies they pefer.

CONCLUSION

From the aforesaid discussion we may come to this conclusion that the people of Manipur must be inspired from the life and the struggle of Dr. Bhim Rao Ambedkar and it may be opined that the main reason for non-coverage of the news from Manipur violence in the mainstream media is beacause of the lack of the representation of their people in the media industry and media houses. Considering the importance and the strategic location, of all the north-eastern states and also for the fact that most of them share international boundaries, it must be the duty of the government to come out with the affirmative action and provide proper representation to the people from North East in all the sectors and especially in media industry.

- Mr. Abhay Kumar
Assistant Professor,
Department of Law, Rajiv Gandhi University, Itanagar,
Arunachal Pradesh -791112
Mob-9545367798

References :

1. SAGE Publications has published a book titled 'Practising Journalism Values, Constraints, Implications'. (2005), Quoted by Punitha pandian
2. No end to deadly violence in India's ethnically-divided Manipur; Greeshma Kuthar; Aljazeera, available at https://www.aljazeera.com/news/2023/7/10/no-end-to-deadly- violence-in-indias-ethnically-divided-manipur
3. B.R. Ambedkar, 'Plea to the Foreigner' from 'What Congress and Gandhi have done to the Untouchables.
4. Babasaheb Dr. Ambedkar's Book collection : Volume 17, 1993, Government of India.
5. Babasaheb Dr. Ambedkar's Book collection: Volume 2, 1993, Government of India.
6. Curran, James, Michael Gurevitch & Janet Woollacott (1982) : 'The study of themedia: theoretical approaches.' In Gurevitch et al. (Eds.), op. cit.

Nanotechnology "AANE WALA KAL"

- Dr. Manish Sharma

ABSTRACT

Nanotechnology is much discussed these days as an emerging frontier because human nature is, to live with better and better facilities. On referring dictionary Nano-technology literally means knowledge use of Mechanical arts and applied Sciences at a level of 10%. An atom is a smallest particle of an element that exist in Universe The goal of Nanotechnology is to build tiny devices called Nanomachines, which are obtained by buildings atoms and molecules.

In this paper, we discussed the methodologies which makes possible to achieve the dream of nanotechnology and its futureapplications. Several typical examples recently worked out by research group are introduced to indicate that these methodologies are actually possible. A single entity that is an atom which holds the universe and by nanotechnology we can play with the Universe.

1. Introduction

Nanotechnology in the modern world is an emerging frontier. On referring dictionary Nanotechnology literally means knowledge or use of mechanical arts and applied sciences at a level of scale of 10m. In layman language it is equivalent to 1/8000th of human hair, one billionth of meter.

An atom is a smallest particle of an element. Everything that exist in this universe is made of atoms, so build this on such a small scale. One has to be able to consider atoms individually and place them preciselyto create the desired structure. The goal of Nanotechnology is to build to tiny devices called Nanomachines, that are achieve by building things atoms by atom, or molecule by molecule. As Nanotechnology is moves concentrate on molecules or atoms rearrangement therefore Nanotechnology sometimes called molecular manufacturing or molecular manufacturing based on Nanotechnology. Nanotechnology includes study of making molecular assembler. Nanorobots or Nanorobotic arm (the utility fog), molecular compiler, specific chemical reactions, modeling tools.

2. Ways to achieve nanotechnology

Every existing thing or object or entity made up of an atom. An atom is so small that it is hard to describe on human scale. To get a rough idea of its size, take a baseball and blow it up to the size of the earth. The atoms of the baseball are consider as the size of grapes. Followings are the ways to achieve nanotechnology

a) Scaling down of micro electronic devices

The most important feature of the nano electronic device, FOGLET is its automatic working containing all the global information & possessing of all the senses that enables him to counter with any situation. Since FOGLET is an electronic robot so our work cannot be completed without discussing the scaling down of microelectronic systems.

According to Gordon Moore Law every component of electronic system is reducing half of its original length in approximately 550 days Le. scaling down of the electronic component is a progressive phenomenon. But there are limits to how far this exponential decrease in device size can go. Let us discuss the case of transistor; at present, we have

transistor in 350 nm across. It might still be reduced in size by another factor of 100 ie. allowing for up to 10.000 transistors in the space taken up by one current transistor above scale satisfies the required molecular scale. But this is at problem associated with a scaling down. Note that once transistor approaches 100 nm, its properties that control the device. operation begins to change. Therefore, the seating down problem at 100 nm or 0.1 micron is also called "0.1 micron barrier".

It must be note that on reaching up to molecular scale the bulk properties of materials become quantum mechanical properties of collection of atoms. In case of doped semiconductors. tunneling effect energy quantization will become apparent and these new properties are the only rays of hope for construction of microelectronic devices. The single-electron transistor is the only solution of the above-mentioned problems.

b) SET (Single electron tran-sistors):

SET is a new type of switching device that uses controlled electron tunneling to amplify current. SET is the key to nanotechnology where share a common electrode. A tunnel junction consist of two pieces of metal separate-problemsIt consist of two junctions by a very thin (1 nm) insulator. Now the only way for electrons in one of the metal electrodes to travel to the other electrode i, to tunnel through the insulator since tunneling is a discrete process, the electric charge that flows through the tunnel Junction flows in multiples of the charge "e" (one) of single electron. Note that whenever electrons are constrained to a small region effect of energy quantization need to be taken into account. It must be noted that present capability preclude the manufacture of any but the most rudimentary molecules structures, the design & modeling of molecular machines in however quite feasible with present technology. But after eliminating dead ends we get more promising designs.

3. Applications and future aspects.

The goal of Nanotechnology is molecular and atomic precision. Nanotechnology has much to learn from nature. Copying, borrowing and learning tricks from nature is one of the primary techniques used by Nanotechnology and has been termed biomimetics. As our human body has different cells to perform different functions, each has to do specific function. If we wish to make a nano-robot that has different parts to operate different functions. Then that nanorobots must inspired from human body.Nanotechnology brings us

a) A super computer no bigger than human cells. A spacecraft no larger or more expansive than the family car. Curing cancer by drinking medicine stirred in to your favorite fruit juice. We could make surgical instruments of such precision and accuracy that they could operate on the cells on molecules from which we are made. We could inexpensively make very strong and very light in weight materials.

b) A piece of coal can be converted in to diamond.

c) The main aim of early nanotechnology was to producethenanosized robotic arm. capable of manipulating atoms and molecules either in to useful products or copies of itself. To builds nanorobots programmed to attacks and reconstructs the molecular structure of the cancer cells. and viruses to make them harmless. It helps in pollution preventions. treatments and remediation. Include detections andsensing, removal of the financed contaminants from air, water and soil.

d) Our dependence on nonrenewable

resources would diminish with Nanotechnology. Nanomachines could construct many resources. Cutting down trees, mining coal or drilling for oil and other petroleum products may no longer be necessary.

e) Global industrialization requires rapid development of clean energy. To preservethe clean air we all breathe and global energy catalyst markets are huge.

f) AUS based company NANOSTELAR that is currently using Nanotechnology to development highly efficient Platinum nanocomposite catalyst solutions to increase the efficiency of automobile catalytic converters and it dramatically reduced the cost. According to them. is the first in the series of nanocomposite catalyst products to: address the energy catalyst, hydrogen fuel cell. solar power and battery markets.

4. The flip side

Nanotechnology could also lead to serious environmental problems. It is largely unknown how nano-structured materials, nanoparticles and the other related Nanotechnologies would interact with other entities already presents in the environment. As the use of Nanotechnology is sealed up. emissions to the environment may also increase and perhaps a new class of toxins or other environmental problems may be created. Nano weapons can be made which are very cheap and easily available to common man.

- Manish Sharma
Department of Physics
Govt. College Nagrota Bagwan
H.P. India-176047
Mob. 86290001115

References :

1. Kawazoç. Yoshiquki. 2003 Realization of prediction of materials properties by as initocompuer simulation" bulletin of materials science Vol 26 page 13.
2. Mettoth. Renjith, 2004 Aug "Nanotechnology: shaping the future". EFY page 40.
3. Prof Kulkarni. G.R. &Raval. P.K. & Jain. Ashish. 2004 Nov. " Nanowonders" EFY page 44.
4. Prof. Kulkarni. G.R. &Raval. P.K. & Jain. Ashish. 2004 Dec. "Nanotechnology: the art of making molecular machine." EFY page 106.
5. Prof. Kulkarni, G.R. &Raval. P.K. & Jain. Ashish. 2005 Jan Nanotechnology: on way to raising the dead." EFY page 56.nanomotors. Nano Lett. 2011, 11, 2543-2550.
7. Wang, H.; Pumera, M. Fabrication of Micro/Nanoscale Motors. Chem. Rev. 2015, 115, 8704-8735.
8. Zhang, L.; Petit, T.; Lu, Y.; Kratochvil, B.E.; Peyer, K.E.; Pei, R.; Lou, J.; Nelson, B.J. Controlled propulsion andcargo transport of rotating nickel nanowires near a patterned solid surface. ACS Nano 2010, 4, 6228-6234.
9. Wang, J. Can Man-Made Nanomachines Compete with Nature Biomotors? ACS Nano 2009, 3, 4-9.
10. Li, J.; Shklyaev, O.E.; Li, T.; Liu, W.; Shum, H.; Rozen, I.; Balazs, A.C.; Wang, J. Self-propelled nanomotorsautonomously seek and repair cracks. Nano Lett. 2015, 15, 7077-7085,
11. Duan, W.; Liu, R.; Sen, A. Transition. between Micromotors Collective Behaviors in Response of to Different Stimuli. J. Am. Chem. Soc. 2013, 135, 1280-1283.
12. Melde, K.; Choi, E.; Wu, Z.; Palagi, S.; Qiu, T.; Fischer, P. Acoustic Fabrication via the Assembly and Fusionof Particles. Adv. Mater. 2018, 30, 1704507.

आश्वस्त रजत जयंती महोत्सव 23-09-2023 की चित्रमय झलकियाँ

डॉ. हरिमोहन धावन

डॉ. तारा परमार

डॉ. प्रकाश बरतूनिया

डॉ. रूपचंद गौतम

डॉ. सत्यनारायण जटिया

सूरज डामोर

रत्न कुमार सांभरिया

डॉ. वी. कृष्णा

शुभकामनाएं

डॉ. देवेन्द्र दीपक भोपाल

भारती दलित साहित्य अकादमी और उसकी मुख्य पत्रिका आश्वस्त से मेरा पुराना संबंध हैं। इस संस्था के संस्थापक और आश्वस्त के संस्थापक संपादक डा पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी के माध्यम से ही मैं इस संस्था से जुड़ा।यह संस्था दलित समाज के लिए सामाजिक न्याय और समरसता के पक्ष में क्रियाशील मंच है जिसमें दलित -गैरदलित सबका स्वागत। डा सत्यप्रेमी उदार आग्रही विद्वान साहित्यकार थे। उनके रहते अकादमी और पत्रिका का व्यापक विस्तार हुआ। मध्य प्रदेश शासन ने अकादमी के कार्यालय के लिए भोपाल में आवास आवंटित किया। मैंने पुस्तकाल के लिए पुस्तकें भेंट की। डा सत्यप्रेमी के निधन से संस्था असहाय हो गयी। बहुत कुछ बिखर गया। डा सत्यप्रेमी के जाने से जो शून्य सामने आया, सुधी प्रज्ञावंत डा तारा परमार ने यथा शक्ति जिस कठिनाई से उस शून्य को भरा उसका परिणाम है कि हम आज आश्वस्त का रजत जयंती समारोह मना रहे हैं। तारा जी के सामने अनेक प्रशासनिक और आर्थिक समस्याएं थीं। उन्होंने हार नहीं मानी । जैसे भी बना आश्वस्त का क्रम भंग नहीं होने दिया। और आज हिंदी की लघु पत्रिकाओं में आश्वस्त का महत्वपूर्ण स्थान है। आज वह नियमित प्रकाशित होने वाला रिसर्च जर्नल है।

तारा जी इस समारोह का निमंत्रण देने स्वयं भोपाल मेरे आवास पर पधारीं।मेरा और पत्नी का स्वास्थ्य ठीक नहीं हैं। खेद है कि हम चाहकर भी कार्यक्रम में शामिल नहीं पा रहे।

समारोह की सफलता के लिए हम दोनों की शुभकामनाएं।

देवेंद्र दीपक/उषा मेहता

पंजीयन संख्या
RNI No. MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2021-2023 उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठा में ,

पत्र व्यवहार का पता :
20, बागपुरा, सांवेर रोड,
उज्जैन 456 010 (म.प्र.)

प्रकाशक, मुद्रक पिंकी सत्यप्रेमी ने भारती दलित साहित्य अकादमी की ओर से
मालवा ग्राफिक्स , 29, वररुचि मार्ग, गुरुद्वारे के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन फोन : 0734-4000030 से मुदित एवं
20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन 456 010 (म.प्र.) फोन : 0734-2518379 से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ. तारा परमार